प्रश्न-: भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करंक और इसकी तुलना बिहार की अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति से भी करें।

उत्तर:भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था 7% की दर से बढ़ने की उम्मीद है। इससे भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन जाएगा। आईएमएफ ने यह भी कहा है कि भारत की अर्थव्यवस्था ने यूक्रेन में युद्ध और बढ़ती मुद्रास्फीति जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन दिखाया है।

भारत की आर्थिक वृद्धि के कुछ प्रमुख चालकों में शामिल हैं:

- **मजबूत घरेलू खपत:** भारत में एक बड़ा और बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग है, जो घरेलू खपत को बढ़ा रहा है।
- **बढ़ता निवेश:** भारत सरकार बुनियादी ढांचे और अन्य क्षेत्रों में भारी निवेश कर रही है, जो घरेलू और विदेशी दोनों निवेश को आकर्षित कर रही है।
- **निर्यात वृद्धि:** फार्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग सामान जैसे क्षेत्रों द्वारा संचालित भारत का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है।

हालाँकि, भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं,

जैसे:

- **मुद्रा स्फीति:** खाद्य और ईंधन की ऊंची कीमतों जैसे कारकों के कारण हाल के महीनों में मुद्रास्फीति बढ़ रही है।
- **बेरोजगारी:** बेरोजगारी एक चुनौती बनी हुई है, खासकर युवाओं के बीच।
- **राजकोषीय घाटा:** भारत सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक है, जो विकास को बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों में निवेश करने की उसकी क्षमता को बाधित कर सकता है।

बिहार की अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति

- बिहार की अर्थव्यवस्था भारत में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। 2021-22 में बिहार की जीएसडीपी 10.98% की दर से बढ़ी, जो राष्ट्रीय विकास दर 8.68% से अधिक थी। बिहार की अर्थव्यवस्था काफी हद तक सेवा-आधारित है, जिसमें कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।

बिहार के आर्थिक विकास के कुछ प्रमुख चालकों में शामिल हैं:

- **सरकारी निवेश:** बिहार सरकार बुनियादी ढांचे और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे अन्य क्षेत्रों में भारी निवेश कर रही है।
- **औद्योगिक विकास:** खाद्य प्रसंस्करण, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों द्वारा संचालित बिहार का औद्योगिक क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है।
- **कृषि विकास:**बिहार एक प्रमुख कृषि राज्य है और इसका कृषि क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है।

हालाँकि, बिहार की अर्थव्यवस्था के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं,

जैसे:

- **गरीबी:**बिहार में भारत में सबसे अधिक गरीबी दर है।
- बेरोजगारी:बेरोजगारी एक चुनौती बनी हुई है, खासकर युवाओं के बीच।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:**बिहार में बुनियादी ढांचे की भारी कमी है, जो आर्थिक विकास में बाधा बन रही है।

भारत और बिहार की अर्थव्यवस्थाओं की तुलना

- भारतीय अर्थव्यवस्था बिहार की अर्थव्यवस्था से कहीं अधिक बड़ी और विविधतापूर्ण है। नॉमिनल जीडीपी के आधार पर भारत का स्थान दुनिया में 5 वां है, जबकि सभी राज्यों की जीएसडीपी की तुलना करें तो बिहार तीसरे स्थान पर है।
- हालाँकि, बिहार भारत में सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक है, और इसकी अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय औसत के साथ अंतर को कम कर रही है। 2021-22 में बिहार की जीएसडीपी विकास दर राष्ट्रीय विकास दर से अधिक रही।
- कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत स्थिति में है और आने वाले वर्षों में इसके तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। बिहार की अर्थव्यवस्था भी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन इसे अभी भी गरीबी और बेरोजगारी जैसी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

प्रश्न:हाल के वर्षों में भारत में आर्थिक विकास के प्रमुख चालकों का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

उत्तर:भारतीय अर्थव्यवस्था हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ी है, 2014 और 2020 के बीच औसत सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7.4% है। यह वृद्धि कई कारकों से प्रेरित है, जिनमें शामिल हैं

- **मजबूत घरेलू खपत:** भारत में एक बड़ा और बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग है, जो घरेलू खपत को बढ़ा रहा है। 2020-21 में, निजी खपत भारत की जीडीपी का 55.7% थी।
- **बढ़ता निवेश:** भारत सरकार बुनियादी ढांचे और अन्य क्षेत्रों में भारी निवेश कर रही है, जो घरेलू और विदेशी दोनों निवेश को आकर्षित कर रही है। निवेश का माप सकल निश्चित पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) 2014 और 2020 के बीच 10.1% की औसत दर से बढ़ा।
- **निर्यात वृद्धि:** फार्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग सामान जैसे क्षेत्रों द्वारा संचालित भारत का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। 2020-21 में भारत का वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात 16.1% बढ़ा।
- इन तीन प्रमुख चालकों के अलावा, अन्य कारकों ने भी हाल के वर्षों में भारत की आर्थिक वृद्धि में योगदान दिया है, जैसे:
- **जनसांख्यिकीय विभाजन:** भारत में युवा और बढ़ती आबादी है, जो एक जनसांख्यिकीय लाभांश है। इसका मतलब यह है कि भारत के पास एक बड़ा कार्यबल है जो आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है।
- **अनुकूल सरकारी नीतियां:** भारत सरकार ने आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए हाल के वर्षों में कई सुधार और पहल लागू की हैं। इनमें वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी), दिवाला एवं दिवालियापन संहिता (आईबीसी) और मेक इन इंडिया कार्यक्रम शामिल हैं।
- भारत में आर्थिक विकास के प्रमुख चालकों की आलोचनात्मक परीक्षा जबकि भारत में आर्थिक विकास के प्रमुख चालकों का उल्लेख ऊपर किया गया है, उनकी आलोचनात्मक जांच करना महत्वपूर्ण है।
- **घरेलू खपत:** हाल के वर्षों में घरेलू खपत भारत में आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक रही है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि घरेलू खपत काफी हद तक सरकारी खर्च पर निर्भर है। 2020-21 में, सरकारी खपत भारत की जीडीपी का 11.7% थी। यह सरकारी खपत का अपेक्षाकृत उच्च स्तर है, और यह स्थिरता के बारे में चिंता पैदा करता है।
- **निवेश:** निवेश भी भारत में आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक रहा है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत में निवेश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सार्वजनिक निवेश है। 2020-21 में, सार्वजनिक निवेश भारत के GFCF का 39.6% था। यह सार्वजनिक निवेश का अपेक्षाकृत उच्च स्तर है, और यह संसाधन आवंटन की दक्षता के बारे में चिंता पैदा करता है।
- **निर्यात वृद्धि:** हाल के वर्षों में भारत का निर्यात तेजी से बढ़ा है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत का निर्यात फार्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग सामान जैसे कुछ क्षेत्रों में केंद्रित है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था इन क्षेत्रों में झटके के प्रति संवेदनशील हो जाती है।
- **अन्य कारक:** भारत की आर्थिक वृद्धि में योगदान देने वाले अन्य कारकों, जैसे जनसांख्यिकीय लाभांश और अनुकूल सरकारी नीतियों पर भी विचार करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये कारक भारत के लिए अद्वितीय नहीं हैं। अन्य देशों में भी युवा और बढ़ती आबादी है, और अन्य देशों ने भी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सुधार और पहल लागू की है।
- कुल मिलाकर, भारत में आर्थिक विकास के प्रमुख चालक मजबूत घरेलू खपत, बढ़ता निवेश और निर्यात वृद्धि रहे हैं। हालाँकि, इन ड्राइवरों की गंभीरता से जांच करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अपनी चुनौतियों से रहित नहीं हैं।

सिफारिशों

- लंबी अवधि में भारत की आर्थिक वृद्धि को बनाए रखने के लिए, विकास के प्रमुख चालकों से जुड़ी चुनौतियों का समाधन करना महत्वपूर्ण है।

यह भी शामिल है:

- आर्थिक विकास को गति देने के लिए घरेलू उपभोग पर सरकार की निर्भरता को कम करना।
- सार्वजनिक निवेश की दक्षता में सुधार।
- भारत की निर्यात टोकरी में विविधता लाना।
- भारतीय कार्यबल को अधिक उत्पादक बनाने के लिए मानव पूंजी में निवेश करना।
- आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सुधारों और पहलों को लागू करना जारी रखना।
- इन चुनौतियों से निपटकर, भारत अपनी आर्थिक वृद्धि को बनाए रख सकता है और दुनिया में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बन सकता है।

प्रश्न:भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा करें और उनसे निपटने के उपाय सुझाएँ।

उत्तर:भारतीय अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें शामिल हैं:

- **उच्च मुद्रास्फीति:** खाद्य और ईंधन की ऊंची कीमतों जैसे कारकों के कारण हाल के महीनों में मुद्रास्फीति बढ़ रही है। उच्च मुद्रास्फीति उपभोक्ताओं और व्यवसायों की क्रय शक्ति को नष्ट कर देती है, और इससे सामाजिक अशांति भी पैदा हो सकती है।
- **बेरोजगारी:** बेरोजगारी एक चुनौती बनी हुई है, खासकर युवाओं के बीच। भारत में एक बड़ी और बढ़ती युवा आबादी है, जो एक जनसांख्यिकीय लाभांश है। हालाँकि, यदि इस लाभांश का अच्छी तरह से प्रबंधन नहीं किया गया, तो यह एक जनसांख्यिकीय आपदा बन सकता है।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- **राजकोषीय घाटा:** भारत सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक है, जो विकास को बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों में निवेश करने की उसकी क्षमता को बाधित कर रहा है। उच्च राजकोषीय घाटा भारतीय अर्थव्यवस्था को बाहरी झटकों के प्रति भी संवेदनशील बनाता है।
- **चालू खाता घाटा:** भारत का चालू खाता घाटा भी अधिक है, जो कमजोरी का एक अन्य स्रोत है। उच्च चालू खाते घाटे का मतलब है कि भारत निर्यात की तुलना में अधिक वस्तुओं और सेवाओं का आयात कर रहा है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था विदेशी पूंजी प्रवाह पर निर्भर हो जाती है।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:** भारत में बुनियादी ढांचे की भारी कमी है, जो आर्थिक विकास में बाधा बन रही है। सरकार को आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सड़क, रेलवे और बंदरगाह जैसे बुनियादी ढांचे में भारी निवेश करने की जरूरत है।
- **असमान वृद्धि:** भारत की आर्थिक वृद्धि असमान रही है, कुछ क्षेत्र और क्षेत्र दूसरों की तुलना में तेजी से बढ़ रहे हैं। इससे क्षेत्रीय और क्षेत्रीय असमानताएं पैदा हुई हैं, जो सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता का एक स्रोत हैं।

चुनौतियों से निपटने के उपाय

- भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए भारत सरकार ने कई कदम उठाए हैं। इसमे शामिल है:

उच्च मुद्रास्फीति को संबोधित करने के लिए:

- ○ सरकार ने मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के प्रयास में ब्याज दरें बढ़ा दी हैं।
- ○ सरकार ने भोजन और ईंधन जैसी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए हैं।

बेरोजगारी दूर करने के लिए:

- ○ सरकार ने युवाओं को आधुनिक अर्थव्यवस्था में नौकरियों के लिए प्रशिक्षित करने के लिए कई कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं।
- ○ सरकार ने युवाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई उद्यमिता विकास कार्यक्रम भी शुरू किए हैं।

- **राजकोषीय घाटे को संबोधित करने के लिए:**
  - ○ सरकार ने अपना खर्च कम करने और राजस्व बढ़ाने के लिए कदम उठाए हैं.
  - ○ सरकार ने धन जुटाने के लिए कई परिसंपत्ति मुद्रीकरण कार्यक्रम भी शुरू किए हैं।
- **चालू खाता घाटे को संबोधित करने के लिए:**
  - ○ सरकार ने निर्यात को बढ़ावा देने और आयात को कम करने के लिए कदम उठाए हैं।
  - ○ सरकार ने मेक इन इंडिया कार्यक्रम जैसे उपायों के माध्यम से विदेशी पूंजी प्रवाह को भी आकर्षित किया है।
- **बुनियादी ढांचे की कमी को दूर करने के लिए:**
  - ○ सरकार ने बुनियादी ढांचे में अपना निवेश बढ़ाया है।
  - ○ सरकार ने सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल जैसे उपायों के माध्यम से बुनियादी ढांचे में निजी निवेश को भी आकर्षित किया है।
- **असमान विकास को संबोधित करने के लिए:**
  - ○ सरकार ने समावेशी वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं।
  - ○ सरकार ने पिछड़े क्षेत्रों और क्षेत्रों को विकसित करने के लिए भी कदम उठाए हैं।

अतिरिक्त सिफारिशें

- सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के अलावा, भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय भी किए जा सकते हैं:
- **सार्वजनिक व्यय की दक्षता में सुधार:** भारत में सार्वजनिक व्यय का एक बड़ा हिस्सा अप्रभावी है। सार्वजनिक व्यय की दक्षता में सुधार से विकास बढ़ाने वाले क्षेत्रों में निवेश के लिए संसाधन उपलब्ध होंगे।
- **भ्रष्टाचार कम करें:** भारत में भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है. भ्रष्टाचार कम करने से सार्वजनिक व्यय की दक्षता में सुधार होगा और कारोबारी माहौल निवेश के लिए अधिक अनुकूल बनेगा।
- **श्रम बाजार में सुधार:** भारत का श्रम बाजार कठोर और अनम्य है। यह रोजगार सृजन और आर्थिक विकास में बाधा है। श्रम बाजार में सुधार से व्यवसायों के लिए श्रमिकों को काम पर रखना और निकालना आसान हो जाएगा, जिससे रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- **अर्थव्यवस्था को अधिक प्रतिस्पर्धा के लिए खोलें:** भारत की अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत प्रतिस्पर्धा के लिए बंद है। यह नवप्रवर्तन और आर्थिक विकास को रोकता है। अर्थव्यवस्था को अधिक प्रतिस्पर्धा के लिए खोलने से नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- इन कदमों को उठाकर भारत सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान कर सकती है और अपने आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है।

❖❖❖